अपठित बोध

अध्याय – 1 अपठित गद्यांश

स्मरणीय बिंदु

अपठित का शाब्दिक अर्थ है—जो पहले नहीं पढ़ा गया हो। किसी भी गद्य खंड को पढ़कर स्वयं समझने और उसके अन्तर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर स्वयं दे पाने की क्षमता का विकास करना ही अपठित गद्यांश को पाठ्यक्रम में रखने का उद्देश्य होता है। इससे विद्यार्थियों की बौद्धिक व अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है।

अपठित गद्यांश को हल करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है—

- अपठित गद्यांश को दो बार अवश्य पढ़ना चाहिए ताकि गद्यांश के मूल अर्थ को समझा जा सके। इससे विद्यार्थियों की पढ़ने की क्षमता का भी विकास होगा।
- गद्यांश के विषय व भाव को समझना चाहिए। इससे विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता का विकास होता है।
- गद्यांश में पूछे गए प्रश्नों को समझकर दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनकर लिखना चाहिए।
- विकल्प का चुनाव गद्यांश में दिए गए तथ्यों पर आधारित होना चाहिए।
- गद्यांश में आए कठिन शब्दों का अर्थ समझने का प्रयास करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के शब्दकोश में वृद्धि होगी।

व्याकरण

अध्याय – 1 पदबंध

स्मरणीय बिंदु

शब्द	एक या एक से अधिक वर्णों का सार्थक व स्वतंत्र ध्वनि समूह शब्द कहलाता है जैसे—लड़का, घर आदि।
पद	'पद' की रचना शब्द से ही होती है। जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है, तो वह पद बनता है। जैसे—लड़का घर जाता है।
पदबंध	जब एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं, तब उस बँधी हुई इकाई को पदबंध कहते हैं; जैसे— मेरा एक बड़ा लड़का घर जाता है। उपर्युक्त वाक्य में 'मेरा एक बड़ा लड़का' पदबंध है।

पदबंध के भेद— पदबंध के पाँच भेद होते हैं—

(क) संज्ञा पदबंध, **(ख)** सर्वनाम पदबंध, **(ग)** विशेषण पदबंध, **(घ)** क्रिया पदबंध, **(ङ)** क्रिया विशेषण पदबंध

(क) संज्ञा पदबंध— जो पदबंध वाक्य में वही प्रकार्य करते हैं जिसे अकेला 'संज्ञा पद करता है; उस पदबंध को संज्ञा पदबंध कहते हैं। संज्ञा पदबंध के शीर्ष में संज्ञा पद होता है; अन्य सभी पद उस पर आश्रित होते हैं।

जैसे– (अ) मेहनत करने वाले छात्र अवश्य सफल होंगे।

(ब) मेरे पिता जी ने ठंड में ठिठुरते निर्धन एवं दुर्बल भिखारी को कंबल दिया।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द संज्ञा पदबंध हैं।

(ख) सर्वनाम पदबंध– जिस पदबंध में शीर्ष के स्थान पर सर्वनाम शब्द हो, उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं। अर्थात् वाक्य में सर्वनाम पद का कार्य करने वाले पदबंध को सर्वनाम पदबंध कहते हैं। सर्वनाम पदबंध के शीर्ष में सर्वनाम पद होता है।

जैसे– (अ) शेर की तरह दहाड़ने वाले तुम काँप क्यों रहे हो?

(ब) तकदीर का मारा वह कहाँ आ पहुँचा?

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द सर्वनाम पदबंध हैं।

(ग) विशेषण पदबंध– संज्ञा पदबंध या सर्वनाम पदबंध की रचना प्राय: विशेषणों के योग से होती है। कहने का भाव यह है कि जो पदबंध संज्ञा या सर्वनाम के विशेषण के रूप में प्रकार्य करते हैं; उन्हें विशेषण पदबंध कहते हैं।

विशेषण पदबंध के शीर्ष में विशेषण पद होता है तथा शेष पद प्रविशेषण का कार्य करते हैं।

जैसे– (अ) उसकी छोटी बहन बहुत बीमार है।

(ब) माताजी को हरे-हरे कच्चे आम खरीदने हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द विशेषण पदबंध हैं।

(घ) क्रिया पदबंध– क्रिया का कार्य करने वाले पदों को क्रिया पदबंध कहते हैं।

जैसे– (अ) नौका नदी में डूबती चली गई।

(ब) उसे सुनाई पड़ रहा है।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में रेखांकित पद क्रिया पदबंध का कार्य कर रहे हैं।

(ङ) क्रिया विशेषण पदबंध– वाक्य में जो पदबंध क्रिया विशेषण पद के स्थान पर आकर वही कार्य करता है जो अकेला क्रिया विशेषण पद करता है तो उस पदबंध को 'क्रियाविशेषण' पदबंध कहते हैं। क्रियाविशेषण पदबंध में शीर्ष के स्थान पर कोई क्रियाविशेषण शब्द आता है;

जैसे– (अ) वह बहुत तेज़ दौड़कर आती है। (रीतिवाचक क्रियाविशेषण पदबंध)

(ब) मैं कल शाम को छ: बजे आऊँगा। (कालवाचक क्रियाविशेषण पदबंध)

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में रेखांकित पद क्रियाविशेषण पदबंध का कार्य कर रहे हैं।

अध्याय - 2 रचना के आधार पर वाक्य-रूपांतरण

स्मरणीय बिंदु

वाक्य– शब्दों का सार्थक समूह जो व्याकरणिक नियमों के अनुरूप हो, वाक्य कहलाता है। जैसे–जयशंकर प्रसाद जी ने 'कामायनी' नामक ग्रंथ की रचना की।

वाक्य के दो अंग होते हैं–

(क) उद्देश्य–वाक्य का वह अंश उद्देश्य कहलाता है, जिसके बारे में वाक्य के शेष अंश में कुछ कहा गया हो।

नीचे के वाक्यों में रेखांकित शब्द उद्देश्य हैं–

लड़का गया।

छात्र पास हो गए।

उस व्यक्ति का लड़का गया।

उस स्कूल के सभी छात्र पास हो गए।

(ख) विधेय—वाक्य का वह अंश विधेय होता है, जो वाक्य के उद्देश्य के बारे में सूचना देता है। नीचे के वाक्यों में रेखांकित शब्द विधेय हैं—

लड़का गया।

छात्र पास हो गए।

लड़का आज गया।

छात्र अन्तिम परीक्षा में पास हो गए।

वाक्य-भेद— वाक्य के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं—

(1) अर्थ के आधार पर (2) रचना के आधार पर

विशेष— आपके पाठ्यक्रम में केवल रचना के आधार पर वाक्यों की संरचना और वाक्य-रूपांतर निर्धारित है। अत: यहाँ इन्हीं का परिचय दिया जा रहा है।

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(1) सरल या साधारण वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य

(1) सरल या साधारण वाक्य— जिस वाक्य में एक उद्देश्य तथा एक विधेय होता है, वह साधारण वाक्य कहलाता है। जैसे—

(अ) सुधीर फुटबॉल खेलता है। (ब) वर्षा हो रही है।

इन वाक्यों में मुख्य क्रिया एक ही है, अत: ये सरल वाक्य हैं।

(2) संयुक्त वाक्य— जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र वाक्य योजक शब्दों के द्वारा जुड़े होते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहा जाता है। जैसे—

(अ) राम आया और श्याम गया। (ब) चुपचाप बैठो अथवा यहाँ से चले जाओ।

(स) वह भूखा था परन्तु उसने खाना नहीं खाया।

इन वाक्यों में दो-दो वाक्य स्वतन्त्र रूप से अपना अर्थ प्रकट कर रहे हैं। कोई भी वाक्य एक-दूसरे पर आश्रित नहीं है।

(3) मिश्र वाक्य— जिस वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य हों तथा वे किसी योजक से जुड़े हों और उनमें एक उपवाक्य मुख्य तथा अन्य उस पर आश्रित हों तो मिश्र वाक्य कहलाते हैं। जैसे—

(अ) विनोद ने कहा कि वह दिल्ली जा रहा है।

(ब) जो लड़का कमरे में बैठा है, वह मेरा मित्र है।

इन वाक्यों में 'विनोद ने कहा' तथा 'मेरा मित्र है'—ये दोनों मुख्य उपवाक्य हैं, क्योंकि इनके आगे आने वाले वाक्य 'वह दिल्ली जा रहा है' तथा 'लड़का कमरे में बैठा है' क्रमश: 'कि' तथा 'जो' योजक से जुड़े हैं, अत: ये दोनों आश्रित उपवाक्य हैं।

मिश्र वाक्य में तीन प्रकार के आश्रित उपवाक्य होते हैं—

(क) संज्ञा उपवाक्य (ख) विशेषण उपवाक्य (ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य

(क) संज्ञा उपवाक्य— जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हों, उन्हें संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। जैसे—

उसने कहा कि मैं स्कूल जाऊँगा।

इस वाक्य में 'मैं स्कूल जाऊँगा' वाक्य संज्ञा उपवाक्य है। संज्ञा उपवाक्य अधिकतर प्रधान उपवाक्य से 'कि' योजक द्वारा जुड़े होते हैं।

(ख) विशेषण उपवाक्य– जो आश्रित उपवाक्य प्रधान वाक्य की, किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे–वही विद्यार्थी सफल होते हैं जो परिश्रमी होते हैं। यहाँ 'जो परिश्रमी होते हैं' विशेषण उपवाक्य है।

विशेषण उपवाक्य प्राय: संबंधवाचक सर्वनाम 'जो' और उसके विभिन्न रूपों (जिसने, जिसे, जिन्होंने, जिसके लिए, जिनका आदि) से प्रारम्भ होते हैं।

(ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य– जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है, उसे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे–

(अ) जब भी मुझे आवश्यकता हुई, मित्रों ने मेरी सहायता की।

(ब) जहाँ-जहाँ हम गए, हमारा स्वागत हुआ।

इन वाक्यों में 'जब भी' और 'जहाँ-जहाँ' से आरम्भ होने वाले उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया के समय अथवा स्थान का बोध करा रहे हैं, अत: ये क्रिया विशेषण उपवाक्य हैं।

क्रिया-विशेषण उपवाक्य पाँच प्रकार के होते हैं–

(i) कालसूचक– ये उपवाक्य जब, ज्यों ही, जब तक, जब कभी आदि से प्रारम्भ होते हैं।

(ii) स्थानसूचक– ये उपवाक्य जहाँ, जहाँ से, जिधर आदि शब्दों से प्रारम्भ होते हैं।

(iii) रीतिसूचक– ये उपवाक्य जैसा, वैसा, इधर आदि शब्दों से प्रारम्भ होते हैं।

(iv) परिमाणसूचक– ये उपवाक्य ज्यों-ज्यों, जैसे-जैसे, जहाँ तक, जितना आदि शब्दों से प्रारम्भ होते हैं।

(v) परिणाम (कार्य-करण) सूचक– ये उपवाक्य क्योंकि, कि, जो, यदि, यद्यपि, चाहे जो, जिसके, ताकि आदि शब्दों से प्रारम्भ होते हैं।

वाक्य-रचनांतरण या रूपांतर

सरल वाक्य को संयुक्त एवं मिश्र बनाना, संयुक्त को सरल एवं मिश्र बनाना तथा मिश्र को सरल वाक्य बनाना वाक्य रचनांतरण या रूपांतर है।

वाक्य रूपांतर करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य के मूल अर्थ में कोई अन्तर न आए। कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

(1) सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य–

सरल वाक्य–वह फल खरीदने के लिए बाज़ार गया।

संयुक्त वाक्य–वह बाज़ार गया और उसने वहाँ से फल खरीदे।

सरल वाक्य–आलसी होने के कारण वह असफल हो गया।

संयुक्त वाक्य–वह आलसी था इसलिए असफल हो गया।

(2) सरल वाक्य से मिश्र वाक्य–

सरल वाक्य–अपने पिताजी के स्वास्थ्य के बारे में मुझे बताओ।

मिश्र वाक्य–तुम मुझे बताओ कि तुम्हारे पिताजी का स्वास्थ्य कैसा है?

सरल वाक्य–कमाने वाला खाएगा।

संयुक्त वाक्य–जो कमाएगा, वह खाएगा।

(3) संयुक्त से मिश्र वाक्य–

संयुक्त वाक्य–सुषमा आई और मीना चली गई।

मिश्र वाक्य–जैसे ही सुषमा आई वैसे ही मीना चली गई।

संयुक्त वाक्य–विद्यार्थी परिश्रमी है इसलिए अवश्य सफल होगा।

मिश्र वाक्य–जो विद्यार्थी परिश्रमी है, वह अवश्य सफल होगा।

अध्याय - 3 समास

स्मरणीय बिंदु

परिभाषा– दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) के मेल से जो नया सार्थक शब्द बनता है, उसे समस्त-पद कहते हैं। इस मेल की प्रक्रिया को समास कहते हैं। समास होने पर बीच की विभक्तियों आदि शब्दों का लोप हो जाता है। **जैसे,** 'देश का भक्त' का समास हुआ–देशभक्त।

समास रचना में दो शब्द (पद) होते हैं। पहला पद 'पूर्व पद' कहा जाता है और दूसरा पद 'उत्तर पद' तथा इन दोनों के संयोग से बना नया शब्द समस्त पद या समास कहलाता है; जैसे–

पूर्व पद	उत्तर पद	समस्त पद/समास पद
दश	आनन	दशानन
घोड़ा	सवार	घुड़सवार
राजा	पुत्र	राजपुत्र
यश	प्राप्त	यशप्राप्त

समास-विग्रह– जब समस्त पद के सभी पद अलग-अलग किए जाते हैं तब, उस प्रक्रिया को 'समास विग्रह' कहते हैं। जैसे–सीता-राम समस्त पद का विग्रह होगा–सीता और राम।

संधि व समास में अन्तर– संधि और समास में मुख्य अंतर यह है कि संधि में वर्णों का मेल होता है और समास में शब्दों (पदों) का मेल होता है। संधि में शब्द को अलग करने की प्रक्रिया 'संधि-विच्छेद' कहलाती है, जबकि समास के पदों को अलग करने की प्रक्रिया को 'समास विग्रह' कहते हैं। जैसे–

पुस्तकालय = पुस्तक + आलय (अ + आ)–संधिविच्छेद

पुस्तकालय = पुस्तकों के लिए आलय–समास विग्रह

समास के भेद– समास के निम्नलिखित छह प्रमुख भेद हैं–

(1) तत्पुरुष समास (2) कर्मधारय समास

(3) द्विगु समास (4) द्वंद्व समास

(5) बहुव्रीहि समास (6) अव्ययीभाव समास

1. तत्पुरुष समास

जब पूर्व पद विशेषण होने के कारण 'गौण' तथा उत्तर पद विशेष्य होने के कारण 'प्रधान' होता है वहाँ तत्पुरुष समास होता है। समास होने पर विभक्ति का लोप हो जाता है। कारक के अनुसार तत्पुरुष के निम्नलिखित भेद होते हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष– जिसके पूर्व पद में कर्मकारक की विभक्ति 'को' का लोप हो, वहाँ 'कर्म तत्पुरुष समास' होता है। जैसे–

समस्त पद	विग्रह
स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त
ग्रामगत	ग्राम को गत
परलोकगमन	परलोक को गमन
मरणासन्न	मरण को आसन्न (पहुँचा हुआ)
यशप्राप्त	यश को प्राप्त

(ii) करण तत्पुरुष– जहाँ पूर्व पद में करण कारक की विभक्ति 'से', 'द्वारा' का लोप हो, वहाँ 'करण तत्पुरुष समास' होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
रोगग्रस्त	रोग से ग्रस्त
हस्तलिखित	हाथ से लिखा हुआ
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित
शोकाकुल	शोक से आकुल

(iii) संप्रदान तत्पुरुष– जहाँ समास के पूर्व पद में संप्रदान की विभक्ति 'के लिए' का लोप होता है, वहाँ 'संप्रदान तत्पुरुष समास' होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
देवालय	देव के लिए आलय
हवनसामग्री	हवन के लिए सामग्री
रसोईघर	रसोई के लिए घर
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
विद्यालय	विद्या के लिए आलय

(iv) अपादान तत्पुरुष– जहाँ समास के पूर्व पद में अपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने का भाव) या डर (भय) का लोप होता है, वहाँ 'अपादान तत्पुरुष समास' होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
भयभीत	भय से भीत
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
रोगमुक्त	रोग से मुक्त
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त

(v) संबंध तत्पुरुष– जहाँ समास के पूर्व पद में संबंध कारक की विभक्ति 'का, की, के' का लोप होता है, वहाँ 'संबंध तत्पुरुष समास' होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
सेनापति	सेना का पति
राजपुत्र	राजा का पुत्र
सेनानायक	सेना का नायक
राजसभा	राजा की सभा
गृहस्वामी	गृह का स्वामी

(vi) अधिकरण तत्पुरुष– जहाँ अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर', का लोप होता है, वहाँ 'अधिकरण तत्पुरुष समास' होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
कार्यकुशल	कार्य में कुशल
शोकमग्न	शोक में मग्न
शरणागत	शरण में आगत
लोकप्रिय	लोक में प्रिय
दानवीर	दान में वीर

(vii) नञ् तत्पुरुष– जहाँ अभाव, कमी, निषेध आदि को सूचित करने के लिए 'अ' या 'अन्' लगा हो, वहाँ 'नञ् तत्पुरुष समास' होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
अयोग्य	न योग्य
अनादर	न आदर
अस्थिर	न स्थिर
अज्ञात	न ज्ञात
अपुत्र	न पुत्र

2. कर्मधारय समास

कर्मधारय समास वहाँ होता है जहाँ पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है अथवा पूर्व पद तथा उत्तर पद में उपमेय-उपमान संबंध होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
नीलकण्ठ	नीला है जो कण्ठ
पीताम्बर	पीत (पीला) है जो अम्बर
महात्मा	महान है जो आत्मा
महापुरुष	महान है जो पुरुष
घनश्याम	घन के समान श्याम
कमलनयन	कमल के समान नयन
मुखचन्द्र	मुख रूपी चन्द्र
विद्याधन	विद्या रूपी धन
चरण-कमल	कमल रूपी चरण
नीलकमल	नीला है जो कमल

3. द्विगु समास

जिस सामासिक पद का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो और समूह या समाहार का बोध कराता हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
तिरंगा	तीन रंगों का समाहार
पंचवटी	पाँच वटों का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार
सप्तशती	सात सौ का समाहार

4. द्वंद्व समास

जिस सामासिक पद में दोनों पद प्रधान हों तथा 'और', 'या' 'अथवा' शब्द का लोप हो, वहाँ द्वंद्व समास होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
रात-दिन	रात और दिन

दीन-दुखी	दीन और दुखी
साधु-संत	साधु और संत
हवा-पानी	हवा और पानी
अन्न-जल	अन्न और जल
लाभ-हानि	लाभ या हानि

5. बहुव्रीहि समास

जिस सामासिक पद के दोनों पद गौण होते हैं। ये दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की प्रधानता की ओर संकेत करते हैं, वे बहुव्रीहि समास कहलाते हैं। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
चक्रधर	चक्र धारण किया है जिसने (विष्णु)
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके (सरस्वती)
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका (शिव)
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका (गणेश)
पीतांबर	पीला है अंबर जिसका (विष्णु)

6. अव्ययीभाव समास

जिस सामासिक पद का पूर्व पद प्रधान व अव्यय होता है और वह अव्यय क्रिया विशेषण का काम करता है, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
प्रतिदिन	हर दिन
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
घर-घर	हर घर में
प्रत्येक	हर एक
आजीवन	जीवन भर

अध्याय - 4 मुहावरे

स्मरणीय बिंदु

मुहावरा– जब कोई शब्द-समूह या वाक्यांश अपना साधारण अर्थ न देकर विशेष अर्थ देता है, तो उसे मुहावरा कहते हैं। जैसे 'सिर हथेली पर रखना' का सामान्य अर्थ संभव नहीं है, क्योंकि कोई भी अपना सिर हथेली पर नहीं रखता। अत: इसका लाक्षणिक (रूढ़) अर्थ लिया जाता है–बड़े-से-बड़े बलिदान के लिए प्रस्तुत होना। मुहावरे मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति को अधिक चुस्त, सशक्त, आकर्षक और प्रभावी बनाते हैं।

लोकोक्ति– यह शब्द 'लोक + उक्ति' से बना है जिसका अर्थ है–जनसाधारण में प्रचलित कथन। लोकोक्तियों का निर्माण जीवन के अनुभवों के आधार पर होता है। अपने कथन की पुष्टि करने के लिए उदाहरण देने या अभिव्यक्ति को अधिक प्रभावी बनाने के लिए लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

मुहावरे और लोकोक्ति में अन्तर– बहुत से लोग मुहावरे तथा लोकोक्ति में कोई अन्तर ही नहीं समझते। दोनों का अन्तर निम्नलिखित बातों से स्पष्ट होता है–

(1) लोकोक्ति लोक में प्रचलित होती है जो भूतकाल का अनुभव लिए हुए होती है, जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रसिद्ध होता है।

(2) लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्य का अंश होता है।

(3) पूर्ण वाक्य होने के कारण लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र एवं अपने आप में पूर्ण इकाई के रूप में होता है, जबकि मुहावरा किसी वाक्य का अंश बनकर आता है।

(4) पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, जबकि मुहावरे में वाक्य के अनुसार परिवर्तन होता है।

विशेष–सी. बी. एस. ई. पाठ्यक्रम में केवल मुहावरे ही निर्धारित हैं।

मुहावरों के अर्थ व उनके प्रयोग

1. **अन्न जल उठना**–रहने का संयोग खत्म हो जाना
   अब तो उनका संसार से अन्न जल उठ गया था।
2. **अक्ल का दुश्मन**–मूर्ख
   रोहित को बार-बार समझाने पर भी वह कोई काम ठीक प्रकार से नहीं करता; वह तो अक्ल का दुश्मन है।
3. **अपना उल्लू सीधा करना**–स्वार्थ सिद्ध करना
   आजकल के नेता देश-सेवा के नाम पर अपना उल्लू सीधा करते हैं।
4. **अपने पैरों पर खड़े होना**–आत्मनिर्भर बनना
   आजकल लड़कियाँ भी पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हैं।
5. **आग-बबूला होना**–बहुत अधिक क्रोध करना
   नौकर द्वारा चोरी किए जाने पर शर्मा जी आग-बबूला हो गए।
6. **आसमान सिर पर उठा लेना**–बहुत अधिक शोर मचाना
   अध्यापक के कक्षा से जाते ही सभी बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।
7. **आस्तीन का साँप**–धोखेबाज मित्र
   राकेश ने धोखे से मोहन की सारी सम्पत्ति हड़प ली। वह तो आस्तीन का साँप निकला।
8. **आकाश-पाताल एक करना**–बहुत परिश्रम करना
   विजय ने कक्षा में प्रथम आने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।
9. **आवाज़ उठाना**–विरोध करना।
   युवाओं ने आरक्षण के विरुद्ध आवाज़ उठाई।
10. **अपने पाँवों पर खुद कुल्हाड़ी मारना**–अपनी हानि स्वयं करना
    समय का सदुपयोग न कर विद्यार्थी स्वयं ही अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मार लेते हैं।
11. **आपे से बाहर होना**–क्रोध में मर्यादा लाँघ जाना
    शिव का धनुष टूटा हुआ देखकर परशुराम आपे से बाहर हो गए।
12. **आकाश-पाताल का अंतर**–बहुत अधिक अंतर
    सगे भाई होने पर भी रावण और विभीषण दोनों के व्यवहार में आकाश-पाताल का अंतर था।
13. **अंग-अंग टूटना**–सारे बदन में दर्द होना
    इस बुखार से तो मेरा अंग-अंग टूट रहा है।
14. **अँगूठा दिखाना**–साफ़ इंकार कर देना
    जब मैंने सेठ जी से सहायता माँगी तो उन्होंने मुझे अँगूठा दिखा दिया।

15. **आँखों का तारा**—बहुत प्यारा
राजीव सभी की आँखों का तारा है।

16. **आँखें खुलना**—होश आना
धोखा खाकर ही सही। चलो! तुम्हारी आँखें तो खुलीं।

17. **आँखें फेर लेना**—प्रतिकूल होना
मुसीबत आते ही परिवार के लोगों ने मुझसे आँखें फेर लीं।

18. **आँखों में धूल झोंकना**—धोखा देना
चोरों ने पुलिस की आँखों में धूल झोंक दी।

19. **आँख लगना**—नींद आना
गाड़ी चलते ही मेरी आँख लग गई।

20. **अठखेलियाँ सूझना**—मज़ाक करना
हम मुसीबत में फँसे हैं और तुम्हें अठखेलियाँ सूझ रही हैं।

21. **आग में घी डालना**—क्रोध को बढ़ाना
बाबू जी तो गुस्से में थे, न कहकर तुमने और आग में घी डाल दिया।

22. **आकाश से तारे तोड़ना**—बहुत कठिन काम करना
सरकारी अफसरों से अपना काम कराना तो आजकल आकाश से तारे तोड़कर लाने के समान है।

23. **एड़ी चोटी का ज़ोर लगाना**—पूरा ज़ोर लगाना/पूरी ताकत लगाना
चुनाव में जीतने के लिए इस बार नेता जी ने एड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया।

24. **ईद का चाँद होना**—बहुत दिनों बाद दिखाई देना
अरे करीम भाई! तुम तो ईद के चाँद हो गए।

25. **कानों-कान खबर न होना**—बिलकुल पता न लगना
अजय कब शहर छोड़कर चला गया। इस बात की किसी को कानों-कान खबर तक नहीं हुई।

26. **कलेजा ठंडा होना**—मन को शांति प्राप्त होना
अपने पोते से मिलकर दादा-दादी का कलेजा ठंडा हो गया।

27. **खून-पसीना एक करना**—बहुत अधिक परिश्रम करना
फ़ैक्टरी को चलाने के लिए श्रीवास्तव जी ने खून-पसीना एक कर दिया।

28. **खाक छानना**—व्यर्थ इधर-उधर घूमना
नौकरी न होने के कारण दीपक आजकल ख़ाक छानता फिर रहा है।

29. **घड़ों पानी पड़ना**—शर्मिंदा होना
महेश जब पैसे चुराते हुए पकड़ा गया तो उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

30. **कोल्हू का बैल**—बहुत अधिक मेहनती
राकेश ने अपनी बहन को उच्च शिक्षा दिलवाने के लिए कोल्हू के बैल की तरह काम किया।

31. **काला अक्षर भैंस बराबर**—अनपढ़
जमींदार जानता है कि रामू के लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

32. **गड़े मुर्दे उखाड़ना**—पिछली भूली बातों को याद करना
अगर जीवन में शांति पाना चाहते हो तो गड़े मुर्दे उखाड़ना बंद करो।

33. **गुड़-गोबर होना**—बने हुए काम का बिगड़ना
प्रदर्शनी में खूब चहल-पहल थी कि अचानक बारिश ने आकर सब गुड़-गोबर कर दिया।

34. घी के दीए जलाना—खुशियाँ मनाना

रामचंद्र जी के वनवास से लौटने पर पूरी अयोध्या नगरी में घी के दीपक जलाए गए।

35. चिकना घड़ा—बेशर्म

प्रमोद को समझाने से कोई लाभ नहीं, वह तो चिकना घड़ा है।

36. चार चाँद लगाना—प्रतिष्ठा बढ़ाना

सभासद के आयोजन में आते ही कार्यक्रम में चार चाँद लग गए।

37. छाती पर साँप लोटना—ईर्ष्या से जलना

मोहन की उन्नति देखकर उसके मित्रों की छाती पर साँप लोट गए।

38. जान पर खेलना—प्राणों को संकट में डालना

भारतीय सैनिक अपनी जान पर खेलकर भी अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हैं।

39. टका-सा जवाब देना—साफ़ इंकार करना

मैं उससे सहायता माँगने गया था। परंतु उसने मुझे टका-सा जवाब दे दिया।

40. टाँग अड़ाना—व्यर्थ में दखल देना

सौरभ से चाहे पूछो न पूछो, वह हर बात में टाँग अड़ाता रहता है।

41. ढेर हो जाना—मर जाना

भारतीय सैनिकों ने चार आतंकवादियों को ढेर कर दिया।

42. तिल का ताड़ बनाना—बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बात कहना

रमेश ज़रा-ज़रा सी बात पर तिल का ताड़ बना देता है।

43. तूती बोलना—प्रभाव होना

इंजीनियर साहब इतने प्रभावशाली हैं कि सारे विभाग में उनकी तूती बोलती है।

44. पाँचों उंगली घी में होना—लाभ ही लाभ होना

इस साल व्यापार में इतना मुनाफा हुआ कि सेठ जी की तो पाँचों उँगलियाँ घी में हैं।

45. थाली का बैंगन—सिद्धांतहीन व्यक्ति

हर्षित पर विश्वास करना ठीक नहीं, वह तो थाली का बैंगन है।

46. दाल न गलना—सफल न होना

सुखवीर ने भरसक प्रयत्न किया परंतु अफसर के आगे उसकी दाल न गली।

47. दाल में कुछ काला होना—कुछ संदेह होना

राकेश की चुप्पी से लगता है कि दाल में कुछ काला है।

48. अपने पैरों पर खड़ा होना—स्वावलंबी होना

बेटे का विवाह तभी करना चाहिए जब वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाए।

49. ऊँट के मुँह में जीरा—आवश्यकता से बहुत कम

इन परीक्षक महोदय को मूल्यांकन के लिए 20 कॉपी देना ऊँट के मुँह में जीरा देना है क्योंकि ये तो 100-100 कॉपी एक दिन में जाँच लेते हैं।

❐❐

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

स्पर्श (भाग-2) (अ) गद्य खण्ड

अध्याय - 1 बड़े भाई साहब

-प्रेमचंद

पाठ का सारांश

प्रस्तुत कहानी 'बड़े भाईसाहब' कथाकार प्रेमचंद द्वारा लिखी गई है। इस कहानी में एक भाईसाहब हैं, जो हैं तो छोटे ही, लेकिन घर में उनसे छोटा एक भाई और है। उससे उम्र में कुछ साल बड़ा होने के कारण उनसे बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ की जाती हैं। बड़ा होने के नाते वे खुद भी यही चाहते और कोशिश करते हैं कि वे जो भी करें, वह छोटे भाई के लिए एक मिसाल का काम करें। इस आदर्श स्थिति को बनाए रखने के फेर में बड़े भाई साहब का बचपन तिरोहित हो जाता है।

अभी तुम छोटे हो इसलिए इस काम में हाथ मत डालो। यह सुनते ही कई बार बच्चों के मन में आता है काश, हम भी बड़े होते तो कोई हमें यूँ न टोकता। लेकिन इस भुलावे में न रहिएगा, क्योंकि बड़े होने से कुछ भी करने का अधिकार नहीं मिल जाता। घर के बड़े को कई बार तो उन कामों में शामिल होने से भी अपने आप को रोकना पड़ता है जो उसी उम्र के अन्य लड़के बेधड़क करते रहते हैं। जानते हैं क्यों, क्योंकि वे अपने घर में किसी से बड़े नहीं होते।

कहानी में, एक बड़े भाई साहब हैं। वे अपने छोटे भाई से पाँच साल बड़े हैं। छोटे भाई की आयु नौ साल है तो बड़े भाई की आयु चौदह साल है। बड़े भाई नौंवीं कक्षा में पढ़ते हैं, जबकि छोटा भाई पाँचवी कक्षा में पढ़ता है। बड़े भाई साहब, छोटे भाई को अपने बड़े होने का एहसास कराते रहते हैं। वे चाहते हैं कि वह (भाई) बहुत पढ़े-लिखे। परन्तु छोटे भाई का मन पढ़ाई में कम और खेल में ज्यादा लगता है। मौका मिलते ही वह हॉस्टल से बाहर निकलकर, मैदान में आकर कभी कंकरियाँ उछालता, तो कभी कागज़ की तितलियाँ उड़ाता। लेकिन कमरे में वापस आते ही बड़े भाई साहब का रौद्र-रूप देखकर उसके प्राण सूख जाते। उनकी लताड़ सुनकर उसकी आँखों में आँसू आ जाते। भाई साहब उसे उपदेश देने लगते। वे उपदेश की कला में बहुत निपुण थे। उनके उपदेश सुनकर छोटे भाई की हिम्मत टूट जाती और वह निराश हो जाता। वह फिर से आशावान होकर, पढ़ाई करने के लिए टाइम-टेबिल बनाता, लेकिन खेलों में रुचि होने के कारण वह कभी भी टाइम-टेबिल के अनुसार पढ़ नहीं पाता। भाई साहब की इतनी फटकार व घुड़कियाँ खाकर भी वह खेलों का तिरस्कार नहीं कर पाता। सालाना परीक्षा में छोटा भाई प्रथम आया और बड़े भाई साहब स्वभाव से इतने अध्ययनशील होने के बाद भी फेल हो गए। अब वह अपने बड़े भाई से दो साल ही पीछे रह जाता है। इतना अधिक पढ़कर भी भाई साहब फेल हो जाते हैं और इतना कम पढ़कर और मज़े से खेलकर भी वह प्रथम दरजे में पास हो जाता है। उसे इस बात से अभिमान हो जाता है। अब वह आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगता है।

एक दिन गुल्ली-डंडा खेलकर जैसे ही लेखक हॉस्टल पहुँचता है, भाई साहब छोटे भाई पर टूट पड़ते हैं। वे कहते हैं कि प्रथम दरजा आने पर तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। आदमी कुछ भी कुकर्म करे पर अभिमान न करे। घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा। केवल इम्तिहान पास कर लेने पर घमंड नहीं करना चाहिए। असल चीज़ तो बुद्धि का विकास है, जो कुछ पढ़ा हो, उसका अभिप्राय भी समझना चाहिए। वे छोटे भाई (लेखक) से कहते हैं कि 'मेरे फेल होने पर मत जाना। मेरे दरजे में आओगे तो पढ़ाई करने में दाँतों पसीना आ जाएगा। लाख फेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज्यादा अनुभव है। जो कहता हूँ उसे गिरह बाँधिए, नहीं पछताइएगा।' लेकिन इतने तिरस्कार पर भी छोटे भाई की पुस्तकों में अरुचि रही और खेलकूद में रुचि।

अगले वर्ष के सालाना इम्तिहान में फिर से भाई साहब फेल हो गए और छोटा भाई अव्वल दरजे में पास हो गया। अब बड़े भाई साहब और छोटे भाई की कक्षाओं में एक साल का ही अन्तर रह गया था। छोटा भाई, बड़े भाई की उपदेश माला, फटकार और तिरस्कार से इतना भयभीत हो चुका था कि उसके मन में यह कुटिल भावना आई कि भाईसाहब एक साल और फ़ेल हो जाएँ तो दोनों एक ही दरजे में हो जायेंगे। फिर वे उसकी फ़जीहत नहीं कर पाएँगे। लेकिन फिर उसने सोचा कि वे उसके हित के लिए ही तो उसको डाँटते हैं। शायद उनके उपदेशों का ही असर है कि वह इतने अच्छे नंबरों से पास हो जाता है। तब उसने अपनी कुटिल भावना को बलपूर्वक निकाल फेंका।

फिर भी छोटे भाई को अपने ऊपर अहंकार हो जाता है। वह बड़े भाई की सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगता है। वह पढ़ाई में कम ध्यान देने लगता है और स्वच्छंद होकर बच्चों के साथ पतंग उड़ाने, खेलने में समय बिताने लगता है।

एक दिन बड़े भाई साहब उसे लड़कों के साथ गली में पतंग लूटते हुए देख लेते हैं तो गुस्से से बोलते हैं कि इन बाज़ारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती, फिर वे उसे तरह–तरह के तर्कों द्वारा समझाते हैं। वे कहते हैं कि तुम्हें (लेखक को) अपने मन से यह अहंकार निकाल देना चाहिए कि वह उनसे महज़ एक दरजा नीचे है क्योंकि पाँच साल बड़ा होने के कारण उनको जो दुनिया व जिन्दगी का तजुरबा है, वह उसकी बराबरी नहीं कर सकता। वे उसे अपनी अम्मा–दादा का तथा हेडमास्टर साहब की बूढ़ी माँ का उदाहरण देकर भी समझाते हैं।

अंततः छोटा भाई उनकी बातों के आगे नतमस्तक हो जाता है और उसके मन में बड़े भाई के लिए श्रद्धा का भाव जाग्रत हो उठता है। बड़े भाई उसको गले लगाते हुए कहते हैं कि वे उसे कनकौए उड़ाने को मना नहीं करते। मन तो उनका भी कनकौए उड़ाने को ललचाता है लेकिन वे उड़ाते नहीं हैं क्योंकि छोटे भाई को सही राह पर ले जाने के लिए खुद को बेराह होने से रोक कर ही वे छोटे भाई के प्रति अपना कर्तव्य निभा सकते हैं।

संयोग से उसी वक्त भाई साहब ने एक कटकर जा रहे कनकौए की लटक रही डोर को उछल कर पकड़ा और बेतहाशा हॉस्टल की तरफ दौड़ लगा दी और पीछे–पीछे छोटा भाई भी दौड़ पड़ा।

❐❐

अध्याय – 2 तताँरा–वामीरो कथा

–लीलाधर मंडलोई

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ 'तताँरा वामीरो कथा' अंडमान निकोबार द्वीप समूह के छोटे से द्वीप पर केन्द्रित है। उक्त द्वीप में विद्वेष गहरी जड़ें जमा चुका था। उस विद्वेष की जड़ मूल से उखाड़ने के लिए एक युगल को आत्म–बलिदान तक देना पड़ा था। उसी युगल के बलिदान की कथा यहाँ बयान की गई है। प्रेम सबको जोड़ता है और घृणा दूरी बढ़ाती है, इससे भला कौन इनकार कर सकता है? इसलिए जो समाज के लिए अपने को बलिदान करता है, समाज उसे व्यर्थ नहीं जाने देता। यही वजह है कि तत्कालीन समाज के सामने एक मिसाल कायम करने वाले इस युगल को आज भी उस द्वीप के निवासी गर्व और श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं।

सदियों पूर्व जब लिटिल अंडमान और कार–निकोबार आपस में जुड़े थे तब वहाँ एक गाँव था। उस गाँव में एक सुन्दर, शक्तिशाली, परोपकारी, दयालु स्वभाव का युवक रहा करता था। उसका नाम था—तताँरा। उसे सभी लोग बहुत प्रेम करते थे। वह गाँव में सभी की सहायता करने के लिए तैयार रहता था। एक शाम वह दिन भर की थकान के बाद समुद्र के किनारे टहल रहा था। उसके कानों में एक मधुर गीत का स्वर सुनाई दिया। वह गाने की दिशा में सुध–बुध खोते हुए आगे बढ़ा, वहाँ उसने लहरों के किनारे एक युवती को देखा जो गीत गा रही थी। वह उसे देखकर एवं गीत सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। दोनों में परिचय हुआ। उसे पता चला वह लड़की पास के किसी दूसरे गाँव की थी। उसका नाम वामीरो था। धीरे–धीरे वे दोनों प्रतिदिन एक–दूसरे से मिलने लगे। उनके मिलने की खबर धीरे–धीरे गाँव में फैल गई। एक दिन जब वे दोनों मेले में पहुँचे तब उन्हें ग्रामीणों द्वारा मिलते हुए देख लिया गया। उस गाँव की परम्परा के अनुसार किसी युवती का दूसरे गाँव के युवक के साथ यह सम्बन्ध परम्परा के विरुद्ध था। उनका विवाह नहीं हो सकता था। यह विरोध देखकर तताँरा को क्रोध आ गया। वह द्वीप के इस ओर था और वामीरो द्वीप के दूसरी तरफ थी। गुस्से में आकर युवक ने अपनी शक्ति युक्त तलवार ज़मीन में गाड़ दी जो धीरे–धीरे उस द्वीप को दो भागों में बाँटती चली गई। तताँरा गड्ढ़े में धँसता चला गया। अन्त में वे दोनों मृत्यु को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार दो प्रेमियों के बलिदान द्वारा उस द्वीप की परम्परा में परिवर्तन आ गया। अब सम्पूर्ण निकोबारी द्वीप में किसी भी गाँव अथवा स्थान के युवक–युवती से विवाह करने की नई परम्परा की शुरुआत हो गई। तताँरा–वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।

❐❐

अध्याय - 3 अब कहाँ दूसरों के दु:ख से दु:खी होने वाले

–निदा फाज़ली

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ 'अब कहाँ दूसरों के दु:ख से दुखी होने वाले' निदा फ़ाज़ली द्वारा लिखित है। इसमें दर्शाया गया है कि आज ऐसे लोग कहाँ हैं जो दूसरों के दु:ख से दु:खी होते हों, द्रवित होते हों। ईश्वर ने इस धरती को सभी जीवधारियों के रहने के लिए बनाया है, जिन्हें खुद उसी ने जन्म दिया है। लेकिन मनुष्य, जो कि ईश्वर की उत्कृष्ट कृति है, ने धीरे-धीरे पूरी धरती को ही अपनी सम्पत्ति बना लिया और अन्य जीवधारियों को दर-बदर कर दिया, इतना ही नहीं, मनुष्य तो अपनी जात को भी बेदखल करने से ज़रा भी परहेज नहीं करता। उसे किसी के सुख-दु:ख की परवाह नहीं है। उसे केवल अपने सुख की चिन्ता है। हमें अच्छे और दयालु लोगों की, जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर जीना जानते हों और दूसरों के दु:ख दूर करने की प्रेरणा देते हों, ऐसे लोगों की खोज करनी चाहिए तथा अत्याचारी अथवा स्वार्थी लोगों को हतोत्साहित करना चाहिए।

लेखक ने पाठ में ऐसे कई उदाहरण दिए हैं जो सभी जीव-जन्तुओं अथवा प्राणधारियों की रक्षा करना, उनकी पीड़ा व दु:ख को समझना अपना कर्त्तव्य मानते हैं। लेखक ने सबसे पहले बाइबिल के सोलोमन जिन्हें कुरान में सुलेमान कहा गया है, का उदाहरण दिया है। वे सभी जीव-जन्तुओं की भाषा समझते थे। एक बार वे सेना के साथ रास्ते से जा रहे थे कि उन्होंने चींटियों की बात सुनी। चींटियाँ घोड़ों की टापों की आवाज़ से व फौज से डर कर एक-दूसरे को बिल में जाने के लिए कह रही थीं। तब उन्होंने चींटियों से कहा कि घबराओ नहीं, खुदा ने सुलेमान को सबकी रक्षा के लिए ही बनाया है। वे मुसीबत नहीं, मुहब्बत हैं। वे एक नेकदिल इंसान हैं। दूसरा उदाहरण, उन्होंने सिंधी भाषा के महाकवि शेख-अयाज के पिता का दिया है। जब वे खाना खाने बैठे तो उनकी नज़र, उनकी बाज़ू पर रेंग रहे च्योंटे पर पड़ी तो वे अपना खाना छोड़कर, उस बेघर च्योंटे को कुएँ पर उसके घर छोड़ने के लिए चल दिए।

बाइबिल और दूसरे पावन ग्रंथों में नूह नाम के पैगंबर का जिक्र मिलता है। उन्होंने घायल कुत्ते को दुत्कारा था। परन्तु कुत्ते ने कहा कि सबको बनाने वाला एक ही है। नूह उसकी बात सुनकर दु:खी होकर मुद्दत तक रोते रहे। 'महाभारत' में युधिष्ठिर का साथ भी अंत तक एक कुत्ते ने निभाया।

लेखक कहता है कि पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था परन्तु अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े आँगनों में सब मिलजुल कर रहते थे पर अब छोटे-छोटे डिब्बों जैसे घरों में जीवन सिमटना शुरू हो गया है।

ये धरती किसी एक की नहीं है बल्कि पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की भी इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। लेकिन मानव जाति ने अपनी बुद्धि से इसमें दीवारें खड़ी कर दी हैं। बढ़ती हुई आबादी, प्रदूषण हथियारों के कारण वातावरण में बहुत अधिक बदलाव हो गया है। अधिक गर्मी, बेवक्त की बरसातें, जलजले, सैलाब, तूफान और नित नए रोग मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन का ही परिणाम है।

लेखक के अनुसार उनकी माँ बहुत दयालु थीं। वे कहती थीं कि फूल-पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए, दरिया को सलाम करना चाहिए, कबूतरों को नहीं सताना चाहिए, मुर्गे को परेशान नहीं करना चाहिए।

लेखक के ग्वालियर के घर में बने कबूतर के घोंसले में से बिल्ली ने एक अंडा तोड़ दिया था। लेखक की माँ ने देखा तो उसे दु:ख हुआ। उन्होंने दूसरे अंडे को बचाना चाहा तो वह उनके हाथ से टूट गया जिसके कारण कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ाने लगे। उनकी आँखों में दु:ख को देखकर माँ की आँखों में भी आँसू आ गए। इस गुनाह को खुदा से माफ़ कराने के लिए माँ ने पूरे दिन रोज़ा रखा। सिर्फ नमाज़ पढ़ी और रो-रोकर खुदा से माफी माँगती रही।

लेखक के बंबई के फ्लैट में कबूतरों ने घोंसला बना लिया था लेकिन उनके द्वारा परेशानी होने पर लेखक की पत्नी ने उनके घोंसले पर जाली लगवा दी। इस कारण से दोनों कबूतर रात भर खिड़की से बाहर खामोश और उदास बैठे रहते, लेकिन अब न तो सोलोमन था जो कबूतरों की भाषा समझकर उनका दु:ख दूर कर सके, न ही लेखक की माँ है जो उनके दु:ख में प्रार्थना करती रहे। अर्थात् समय के साथ लोगों की भावनाओं में भी बहुत अन्तर देखने को मिल रहा है। अंत में लेखक कहता है कि हमें नदी व सूरज की तरह दूसरों की भलाई के कार्य करने चाहिए, तभी संसार के सभी जीव सुखी व प्रसन्न हो पाएँगे।

❐❐

खण्ड 'ब' : काव्य खण्ड

अध्याय – 1 साखी

–कबीरदास

कविता का सारांश

कबीर ग्रंथावली से संकलित 'साखी' कबीरदास द्वारा रचित है। 'साखी' शब्द 'साक्षी' शब्द का ही तद्भव रूप है। साखी शब्द साक्ष्य से बना है। जिसका अर्थ होता है—प्रत्यक्ष ज्ञान। यह ज्ञान गुरु शिष्य को प्रदान करता है। संत संप्रदाय में अनुभव ज्ञान की ही महत्ता है, शास्त्रीय ज्ञान की नहीं। कबीर का अनुभव क्षेत्र विस्तृत था। 'साखी' वस्तुत: दोहा छंद ही है। प्रस्तुत पाठ की साखियाँ इसका प्रमाण हैं कि सत्य की साक्षी देता हुआ ही गुरु, शिष्य को जीवन के तत्त्व ज्ञान की शिक्षा देता है। यह शिक्षा जितनी प्रभावपूर्ण होती है उतनी ही याद रखने योग्य भी।

इन साखियों में संत कबीर ने वाणी, ईश्वर, आत्मज्ञान, ज्ञान और अज्ञान, विरह, निंदक, व्यावहारिक ज्ञान आदि के विषय में बताया है।

कबीर कहते हैं ऐसी मीठी वाणी बोलनी चाहिए जिससे बोलने व सुनने वाले दोनों को शान्ति मिले। वे कहते हैं कि राम तो प्रत्येक प्राणी के मन में वास करता है फिर भी लोग उसे देख नहीं पाते। अहंकार और परमात्मका इकट्ठे नहीं रह सकते। परमात्मा का बोध जगने पर अहंकार मिट जाता है। प्रभु का रहस्य जानकर, उनके विरह में तड़पने वाला मनुष्य दु:खी है जबकि संसारी लोग सुखी हैं। विरह रूपी साँप के डँसने से विरहगी आत्मा तड़पती है, उसे परमात्मा के बिना शान्ति नहीं मिलती। निदक को अपने पास रखना चाहिए क्योंकि वह मनुष्य के स्वभाव को निर्मल करता है। ईश्वर प्रेम के ढाई अक्षर से ही मिलते हैं। अपनी सांसरिक वासनाओं रूपी घर को जलाने पर ही प्रभु की प्राप्ति होती है।

❐❐

अध्याय – 2 पद

–मीरा

कविता का सारांश

प्रस्तुत पाठ में संकलित 'पद' मीरा ग्रंथावली से लिए गए हैं। कवयित्री मीराबाई ने इन दोनों पदों में अपने आराध्य श्रीकृष्ण को सम्बोधित किया है। मीरा अपने आराध्य से मनुहार (प्रार्थना) भी करती हैं, लाड़ भी लड़ाती हैं और मौका आने पर उलाहना देने से भी नहीं चूकतीं। उनकी क्षमताओं का गुणगान एवं स्मरण करती हैं और उन्हें उनके कर्तव्य याद दिलाने में भी देर नहीं लगातीं।

पहले पद में, कवयित्री मीरा, भगवान श्रीकृष्ण भक्तों के प्रति प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि श्रीकृष्ण अपने भक्तों के दुख हरने वाले हैं। जैसे उन्होंने द्रोपदी के चीर (साड़ी) बढ़ाकर उसकी लाज रखी, भक्त प्रहलाद की नरसिंह रूप धारण कर के जान बचाई, ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया, उसी प्रकार अपनी इस दासी अर्थात् भक्त के भी दु:खों का नाश कर दें, उनके दु:खों को हर लें।

दूसरे पद में मीरा कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति व प्रेम भावना को उजागर करते हुए कहती हैं। कि श्रीकृष्ण उन्हें नौकर (सेविका) बना कर रख लें। मीरा हर प्रकार से श्रीकृष्ण के पास रहना चाहती हैं। इसलिए वे कहती हैं कि नौकर बनकर वे बगीचा लगाएँगी ताकि इसी बहाने नित्य प्रात: प्रभु के दर्शन कर सकें। वृंदावन की संकरी गलियों में गोविन्द की लीला का गुणगान करेंगी। वे कहती हैं कि नौकर बनकर उनको

तीन फायदे होंगे–उन्हें हमेशा श्रीकृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे, उनकी याद नहीं सतायेगी, भक्ति रूपी भाव का साम्राज्य बढ़ता जाएगा। वे कहती हैं मोहनमुरली वाले ने पीले वस्त्र, मोर के पंख व वैजयन्ती फूल की माला धारण किए हुए है और वृंदावन में वे गाय चराते हैं। वे ऊँचे–ऊँचे महल बनाकर उसकी खिड़कियों से, कुसुम्बी साड़ी पहनकर, श्रीकृष्ण का दर्शन करेंगी। वे अपने प्रभु गिरधर गोपाल के दर्शन के लिए बहुत बेचैन है। तभी वे आधी रात को ही यमुना जी के तट पर उनके दर्शन करना चाहती हैं।

❐❐

OSWAAL BOOKS
LEARNING MADE SIMPLE